व्या०वार्ता - 7
07-07-2020

स्नातक तृतीय खण्ड

मैथिली कथाक परम्परा

मिथिला प्राचीन कालहिसँ सभ्यता संस्कृतिक पोषक आ संरक्षक स्थल अछि। विभिन्न जातिक धर्मक लोक एतय रहैत छथि आ अपन अपन सम्प्रदाय विशेषक पावनिक संग-संग सम्पूर्ण राष्ट्रमे प्रचलित अन्य त्योहार सेहो मौलि-चालि मनबैत छथि। एहि पावनि सभक फराक फराक कथा अछि जे अदौं कालमे मौखिक रूपें आ आब लिखित रूपसँ प्राप्त होइत अछि। एहि कथा सभक अभाव मे पावनिक कोनो औचित्य स्पष्ट नहि कएल जा सकैत अछि

एहि पावनि-तिहारक कथा परम्पराक रूपमे आयल वर्तमान पीढ़ीक लोक अपन पुरान पीढ़ीसँ एकरा मौखिक रूपें ग्रहण कयलनि आहिसँ एकर भाव-भंगिमामे परिवर्तन आयल एहि तथ्यकें स्वाभाविक सेहो मानल जा सकैत अछि एहि प्रसंग प्रो० रमानाथ झा लिखैत छथि - " जहिना मनुष्य तहिना भाषा सेहो प्रतिदिन परिवर्तनशील थिक। ओ कथा वा फकड़ा वा गीत आदि सहस्त्र वर्षसँ मौखिक रूपें आबि रहल अछि, तकर सहस्त्र वर्ष पूर्वक रूप आ आधुनिक रूपमे ओहिना अन्तर परिलक्षित होयत जेना एक शिशुक आ ओकर युवावस्था मे होइत अछि"

साहित्यकार के संवेदनशील प्राणी कहल जाइत अछि। ओ जाहि परिवेश मे रहैत अछि तकर सुख-दुख, आपदा-विपदा, वांछित-अवांछित क्रियाकलाप, समाजक ~~स~~ शोषकीय प्रवृत्ति आदि प्रक्रिया ओकरा उद्वेलित करैत रहैत अछि। इएह उद्वेलन ओकरा साहित्य रचना दिस प्रेरित करैत अछि। इएह उद्वेलन ओकरा साहित्य रचना दिस प्रेरित करैत अछि। एकर परिणाम भेल जे कथा साहित्यक माध्यमसँ सामाजिक जीवनक उद्घाटन भेल, वर्तमान सामाजिक वैयक्तिक व्यवस्थाक प्रति विक्षोभ बनल आ प्रतिक्षण होमयवला निरंतर परिवर्तनगामी तथ्य समाजक समक्ष आओल। मुदा एहि प्रकारक कथाक रचनाक प्रेरणा मात्र समाजमे रहि कऽ नहि भऽ सकैत अछि। ओकरा पर कोनो ने कोनो पूर्व मे रचित साहित्यक प्रभाव अवश्य पड़ैत अछि। मैथिली कथा साहित्य पर सेहो प्राचीन भारतीय साहित्यक संग-संग पाश्चात्य साहित्यक प्रभाव स्पष्टतया देखाइत अछि।

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक (मैथिली)
विश्वेश्वर सिंह जनता महावि०